R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान पर विशेषांक

वर्ष 24 | अंक 7 | रविवार, इलाहाबाद, 7 जुलाई 2024 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

इस बार प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान

कदम कदम है मुश्किलें ,
पर बढ़ रही हैं बेटियां
पर्वतों की चोटियों पे,
चढ़ रही हैं बेटियां।

बेटियों पर प्रेम-प्यार-व्यवहार से प्रगति के इस दौर में प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान का रचनात्मक कर्म सराहनीय है । बेटियों के वजूद और सवाल पर प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान की दृष्टि सार्थक और प्रबल है । अपनी रचनात्मक ऊर्जा से देश समाज में अपनी पहचान बनाने वाली प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान की कलम संस्मरण,

यात्रा वृत्तान्त, लघुकथा, कहानी एवं कविता के क्षेत्र मे खूब चल रही है । कविता में विविध भाव और विम्ब से सराबोर प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान की रचनाओं की बानगी देखिये -

कितना सुख था कितनी खुशियां,
उस बरगद की छांव में।
पूनम की उजली रातों में,
जब सैर करी थी नांव में।
सपनों में आके लहराए नदिया मोरे गांव की।
कल कल छलछल बहती जाए
नादिया मोरे गांव की।।

दूसरी बानगी देखिये -

पेट की खातिर घर को छोड़ा,
हम कितने मजबूर हुए।
अपने घर में राजा थे ,
परदेस में तो मजदूर हुए।।

शिक्षा , विवाह और बच्चों के पालन-पोषण के साथ जीवन के सरल सोपान को पार कर आज हिन्दी साहित्य की सेवा मे पूरी तनमयता के साथ लगी हुई **प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान को जुलाई माह का सावित्री देवी स्मृति सम्मान देते हुये संस्था गदगद है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है।** प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान पर केन्द्रित इस अंक को पढ़िये और बताइये कि वह अपनी रचना धर्मिता को लेकर साहित्य के किस मुकाम पर है। प्रतिक्रिया जरूर दें । अंत में -

लिखना हीरा-मोती, सरसों,
भावों का गुंजार लिए ।
अपनी रचना मे देती हैं ,
मधुर-मधुर फुहार लिए ।

- उमेश श्रीवास्तव

मेरा सृजन

प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान की कलम से

मेरा गीत ,गजल का शौक रेडियो , कवि सम्मेलन मुशायरों में गीत, गज़ल, कविता सुनकर और हाई स्कूल मे सहेलियों के साथ शेरो शायरी ,अंत्याक्षरी,के साथ परवान चढ़ा।

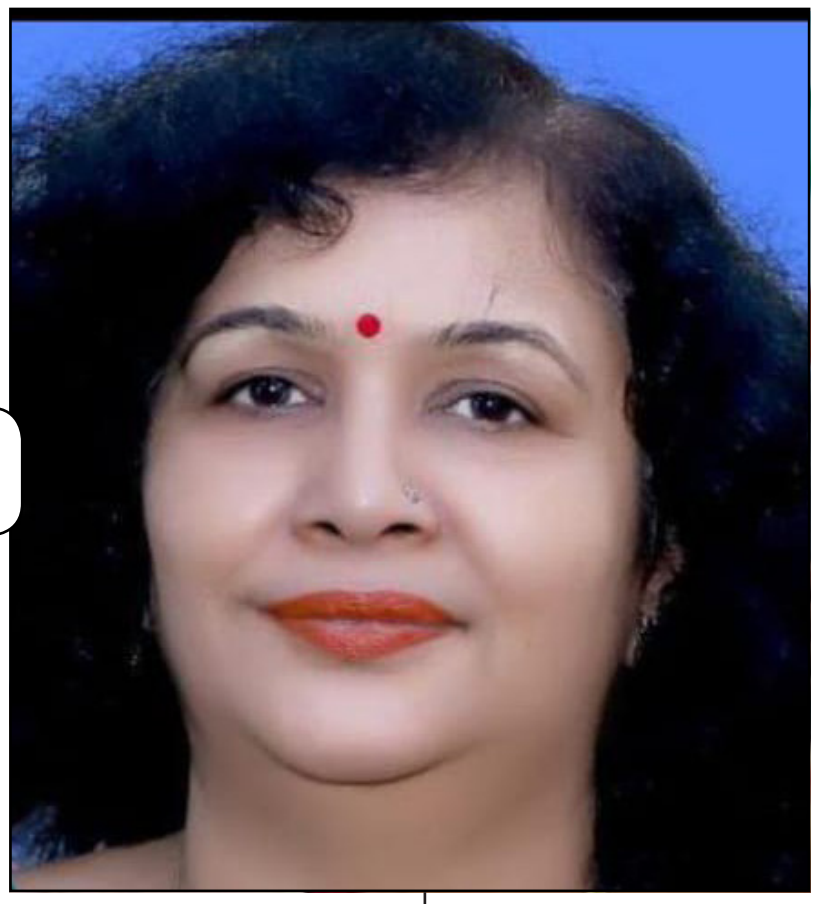

धीरे धीरे टूटी फूटी शायरी , शेर लिखे। और जब इण्टर के बाद पढ़ने के लिए राजस्थान यूनिवर्सिटी गई।तो वहां नए वातावरण मे पुराने शौक शिथिल हो गए। मैंने बी ए पूर्ण करके पुनः अपनी यूनिवर्सिटी रुहेलखंड विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय में एम ए किया। तब फिर से काव्य साहित्य में मेरी विशेष अभिरुचि उत्पन्न हुई। शिक्षण काल में साहित्यिक गतिविधियों में शामिल होकर काव्य प्रतियोगिता काव्य पाठ करने का सुअवसर प्राप्त हुआ फिर एम फिल करने आगरा गई वहां शोध कार्य की व्यस्तता के कारण और बिना पोषण के साहित्य लेखन का पौधा मुरझाने लगा। एम फिल पूरीहुई। पी एच डी रजिस्ट शन और विवाह भी संपन्न हुआ।अब पुत्र रत्न मिला तो दुनियादारी एक तरफ मां की ममता एक तरफ। पीएच डी कार्य भी इसी दौरान पूर्ण किया। क्यूंकि बाद में पालन पोषण में समय नहीं मिल पाना था। दो तीन साल निकल गए और मैंने स्योहारा डी आर दानी मे शिक्षण कार्य किया।और यहीं पर मुझे मिली जीवन की नई दिशायें। मेरे साहित्यिक जीवन ने करवट ली।

अमर उजाला समाचार पत्र उस समय विभिन्न प्रतियोगिता तीज त्यौहार पर आयोजित करता था । जिसमे मैं विजेता बनी और पुरस्कार प्राप्त किए। यहीं से मुझे मुक्तक,दोहे,कविता गीत लिखने की बहुत ऊर्जा और प्रेरणा मिली।पुरस्कार प्राप्त कराने का दायित्व अमर उजाला के वरिष्ठ पत्रकार , कवि,साहित्यकार ,श्री वीरेंद्र पुष्पक जी को था। उन्होंने मुझे अंतर्राष्टष्ठीय प्रसिद्धि प्राप्त श्रद्धेय शायर हिलाल स्योहारवी साहब से मिलवाया। श्री हिलाल साहब हास्य व्यंग के शायर रहे हैं।

उनके व्यक्तित्व की जितनी प्रशंसा की जाए वो कम ही रहेगी। अपने शागिर्द को अंदर से सख्त चोट करना और बाहर से संभालना, संवारना उनके व्यक्तित्व में शामिल था। उनके पितृत्व स्नेह की छाया में मैने शायरी को समझा और सीख है उतना ही समय मिला तो अपनी नींद अपना सुख थोड़ा छोड़ना तो पड़ता है उतना संघर्ष रहा बाकी किसी का विरोध नहीं रहा मेरे लेखन में सहयोग रहा

...शेष पृष्ठ 3 पर

प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान की कविताएं

बेटियां

कदम कदम है मुश्किलें ,
पर बढ़ रही हैं बेटियां
पर्वतों की चोटियों पे,
चढ़ रही हैं बेटियां।

कदम मिला के चल रही हैं ,
ये बदलते दौर से।
रह जाते पीछे बेटे आगे,
बढ़ रही हैं बेटियां।

ना डर रही न दब रही ,
हैं शान से खड़ी हुई।
अधिकार अपने लेने को अब,
लड़ रही हैं बेटियां।

देके जनम मारा कभी
कभी कोख में मिटा दिया।
वजूद की लड़ाई कब से,
लड़ रही हैं बेटियां।

आकाश या समंदरों से इनको
कोई डर नहीं।
हौसलों के पंख लेके ,
अब उड़ रही हैं बेटियां।

कामयाबी चूमती है बढ़के,
अब इनके कदम।
कीर्तिमान नित नए ही,
गढ़ रही हैं बेटियां।

ग़ज़ल

रफ्ता-रफ्ता ये सर्दी यूं आने लगी।
गुनगुनी धूप अब मन को भाने लगी।।

ऐसे कोहरे ने दस्तक दी अब रात को।
सुबह सूरज से आंखें चुराने लगी।।

सूनी-सूनी सी गलियां हुई रात में।
सर्द हवा भी तो सुंईयां चुभाने लगी

धारों कि कल- कल से बादल उठे।।
बूंद मोती सी बन झिलमिलाने लगी।।

चांद तारे भी अब तो ठिठुरने लगे।
रात ममता का आंचल उढ़ाने लगी।।

दिन तो ढलने लगा बात ही बात में।
रात कोई ग़ज़ल अब सुनाने लगी।।

क्या खूब है मौसम

क्या खूब है मौसम ये बरसात का मौसम ।
दिल कहे दिलबर से मुलाकात का मौसम।।

संग बूंदों के बरसती हैं
मोहब्बत की सदाएं।
आशिक को सताए है,
तन्हा रात का मौसम।।

रिमझिम के शरारों ने भी,
खूब आग लगाई ।
बिछड़ी हुई आंखों में है,बरसात का मौसम।।

हाथों में हाथ लेकर जब,भीगे थे साथ में ।
उमड़ा जवां दिलों में है,जज्बात का मौसम।।

अंबर निभाई है कुछ ऐसे,
ये रीत प्यार की ।
धरती के वास्ते ले आया है,
सौगात का मौसम ।।

पूनम को याद आ गई वो,
कागज़ की कश्तियां।
वो बारिशें, वो भीगते हुए,
लम्हात का मौसम।।

गज़ल

कौन है मुझमें जो मुझसे ,
यूं शर्मिन्दा रहता है।
खोल के पिंजरा उड़ने को,
बैचेन परिंदा रहता है।

गुड्डे गुड़िया, हाथी घोड़े,
झूले और मेले ठेले ।
हर वक्त! खिलौनों में छुपकर ,
ये बचपन जिंदा रहता है।

कैसे कब हमला कर देगा ,
ये कहना कितना मुश्किल है।
क्योंकि इन्सानी शक्लों में ,
ताउम्र दरिंदा रहता है।

करम तेरे बेमानी सब फिर,
क्यूं इतराया करता है।
ये मन माया में फंस कर तो,
बस झूठ पुलिंदा रहता है।

ये किसके हाथ में डोरी है,
सबको कौन नचाता है।
पूनम ये अपने साज सजाए,
कौन साजिंदा रहता है।

फौजी पति को पाती

पिया तोहे भेजूं पाती भेजूं पाती रे।
कौन दे तेरी खबर भी तो न आती रे।

रास्ते हों बर्फ के,या रेत के हों टीले।
देश का पहरी बना तू, छोड़ सब रंगीले।
तेरी चिन्ता में है रहते नैना मेरे गीले।
पीड़ा मन की किसको बताती रे।
पिया तोहे भेजूं पाती, भेजूं पाती रे।

बिन तेरे सूना है आंगन, फीके है रंग सारे।
मात भईया तात बहना मुरझा गए बेचारे।
याद करता गांव तुझको ओ नयन के तारे।
अब तो आजा रौंदकर दुश्मन की छाती रे।
पिया तोहे भेजूं पाती ।।

चांद तारे जागते हैं संग ओ अलबेले।
पूछतीं पगडंडियां जो खेल माटी खेले।
रास भी आते नहीं ये जगत के मेले।
आओ सजन फिर से जलेंगे दीप बाती रे।
पिया तोहे भेजूं पाती।

देहरी छूटी जाय री अम्मा

देहरी छूटी जाय री अम्मा, नैहर छूटा जाए।
बाबुल भी पछताय री अम्मा,
अंसुवन नीर बहाए।।

काहे को तूने ब्याह किया री,
काहे करी विदाई।
कोख की जाई बेटी तूने ,पल में करी पराई।
पीर भरी ये रीत ये रस्में
क्यूं दुनियां ने बनाई।
छोड़ के अपना सब कुछ जाना ,
जाना देश पराए।
देहरी छूटी जाय री अम्मा नैहर छूटा जाए।

सखियों के संग झूला झूली,
अमिया, जामुन तोड़े।
फूट फूट अब रोवें सारी हमसे मुखड़ा मोड़ें।
छूट रही हैं गलियां,
सखियां मिलन के संग बिछोड़े
क्या क्या हमसे छूट रहा री
किसको ये बतलाए।।
देहरी छूटी जाय री अम्मा,
नैहर छूटा जाए।।

तेरे आंगन फुदकी ,
चहकी बनके मैं तो चिड़िया ।
छुप छुप-सखियों के संग खेले,
हमने गुड्डा गुड़िया।
टूट गया मन जैसेखिलौने ,
छूटे द्वार किवड़िया।
ओ मेरी मैया पांव पड़ूं तेरे,
जल्दी लियो बुलाए।।
देहरी छूटी जाय री अम्मा, नैहर छूटा जाए।

सरस्वती वंदना

हे ज्ञान दायिनी अम्बे,
मैं शरण तुम्हारी पाऊं।
अज्ञान मेरा मां हर लो,
चरणों में शीश झुकाऊं।

भाषा परिभाषा की परिधि,
तुम शब्दों की जननी।
तुम ज्ञान सलिला सरोवर ,
मैं निशब्द कमलिनी।
मिटे ये ज्ञान पिपासा,
जो ज्ञान नीर मैं पाऊं।
हे ज्ञान दायिनी अम्बे मैं शरण
तुम्हारी पाऊं।।

तुम कालातीत,तुम वर्णनातीत ,
तुम ही तो बुद्धि प्रदाता।
लब्ध प्रतिष्ठित ज्ञानी जन,
बने जो तुमको ध्याता।
जग की सुंदर रीत नीत मां,
मैं तुमसे ही पाऊं।
हे ज्ञान दायिनी अम्बे,
मैं शरण तुम्हारी पाऊं।।

उर में मोह का बंधन है,
तुम उदित सूर्य सम आओ।
काट के तम के धागे मां,
ज्ञान ज्योति बिखराओ।
वरद हस्त मस्तक पर रख दो,
जग जीवन सफल बनाऊं।
हे ज्ञानदायिनी अंबे ,मैं शरण तुम्हारी पाऊं।।

अंबिया हमरे गांव की

खट्टे-मीठे स्वादों वाली,
अंबिया हमरे गांव की।
बाग बहारों,बगिया वाली
ठंडी-ठंडी छांव की।

खेल-खेल में, भागें-दौड़ें
चढ़े डाल परअंबिया की।
जी भर तोड़ी,चूसी,फेंकी
हमने गुठली अंबिया की।
उसके झोले,उतनी अंबिया,
जितनी जिसकी दांव थी।।
अंबिया हमरे गांव की।।

भोर भए जब माली जाए,
बाग अकेला छोड़ कर।
चुपके-चुपके जेबें भरके
हम ले आते तोड़ कर ।
आहट भी न लगने दें तब
हम सब अपने पांव की।।
अंबिया अपने गांव की।।

उमड़ें-घुमड़ें मेघा आएं
भीगे जो अमराई में।
चूस-चूस के अंबिया सारे
नाचें फिर अमराई में।
कोयल बोली मीठी, कौवा
बोली कड़वी कांव की ।।
अंबिया हमरे गांव की।।

नदिया मोरे गांव की

कलकल छलछल बहती जाए,
नदिया मोरे गांव की।
शाम सवेरे हमें बुलाए,
नदिया मोरे गांव की।।

चंद्रकिरण लहरों संग खैले ,
करती है अठखेलियां।
मत्थम मत्थम पवन भी छेड़े,
करता है रंगरेलियां।
मन में समाए, प्रीत जगाए
नदिया मोरे गांव की।
कलकल छलछल बहती जाती
नदिया मोरे गांव की।।

कितना सुख था कितनी खुशियां,
उस बरगद की छांव में।
पूनम की उजली रातों में,
जब सैर करी थी नांव में।
सपनों में आके लहराए नदिया मोरे गांव की।
कल कल छलछल बहती जाए
नादिया मोरे गांव की।।

दूर बहुत हैं अब तो साथी ,
भेज सके ना तुझको पाती।
पास बची हैं कुछ ही सांसे,
बस वो ही तो आती-जातीं ।
प्रेम दीवानी, नेह छलकाए
नदिया मोरे गांव की।।
कल कल छल छल बहती जाए,
नदिया मोरे गांव की।

मजदूर दिवस

पेट की खातिर घर को छोड़ा,
हम कितने मजबूर हुए।
अपने घर में राजा थे ,
परदेस में तो मजदूर हुए।।

नीम की ठंडी छांव मिली ना,
धूप में तप कर गात जले।
और कड़ाके की सर्दी में
ठिठुर ठिठुर कर हाथ गले।
मौसम की हम मार भी सहते ,
सहने के दस्तूर हुए।
पेट की खातिर घर को छोड़ा,
हम कितने मजबूर हुए।।

सोमु गुड़िया रोते गाते,
याद करें बस दादी को।
चना चबैना, गुड्डे गुड़िया ,
खेल खिलौने साथी को।
मासूमों की गलती क्या थी
क्यों अपनों से दूर हुए।।
पेट की खातिर घर को छोड़ा,
हम कितने मजबूर हुए।।

भूख ,गरीबी, दर्द ने घेरा,
किस्मत में छाया है अंधेरा।
काम ही काम हैं बस जीवनमे,
होता सुबह से रात का फेरा।
बोझा ढोया, पत्थर फोड़ें,
काम से थक कर चूर हुए।
पेट की खातिर घर को छोड़ा ,
हम कितने मजबूर हुए।।

अजब बेदर्दी गजब की सर्दी

अजब बेदर्दी गजब की सर्दी,
गलन बढ़ी रे गलन बढ़ी।।
हाथ पैर सुन्नियाते जाते,
पड़ा जो पाला चुभन बढ़ी।।

थर थर थर कांप रहे सब,
अलाव जलाके ताप रहे सब ।
डिग्री सेल्सियस नाप रहे सब,
ठंड बढ़ी अकड़न बढ़ी।
अजब बेदर्दी गजब की सर्दी,
गलन बढ़ी रे गलन बढ़ी।।

शीत लहर से चुभती सुईयां,
बूंद कोहर से झरतीं गुइयां।
ठिठुरे पाखी ढूंढे रे ठईयां,
धुंध बढी फिर घुटन बढ़ी।
अजब बेदर्दी गजब की सर्दी,
गलन बढी रे गलन बढ़ी।।

गेहूं गेहूं अब पड़ेंगे दाने,
ओस बूंद लगीं बर्फ बिछाने।
सूर्य देव सोयें चादर ताने,
धूप छिपी ठिठुरन बढ़ी।
गलन बढ़ी रे गलन बढ़ी।।

शाम से ही कोहरा छा जाए,
चार कदम भी नजर ना आए,
जाड़ा किट किट दांत बजाए,
कांपे तन सिहरन बढ़ी।
अजब बेदर्दी गजब की सर्दी,
गलन बढ़ी रे गलन बढ़ी।

मां है

मां है, जो बस मां होती है।
बच्चों की दुनियां होती है।।

नन्हें मुख में डाले निवाले ।
पी जाती कष्टों के प्याले।
करे संघर्ष बच्चों को पाले।
मां तो बस ममता होती है।
मां है जो बस मां होती है।

सपनों में बच्चा डर जाए ।
रो कर जब मां मां चिल्लाए।
दौड़े मां सीने से लगाए।
मां शिशु कीआशा होती है।
मां है ,जो बस मां होती है।।

प्रसव की पीड़ा सह जाती रे।
शिशु को गोद में जब पाती रे।
दूध से छाती भर जाती रे।
मां सी कौन भला होती है।
मां है, जो बस मां होती है।

होवे जनम अमृत पिलवाए।
उंगली पकड़ चलना सिखलाए
भले बुरे का भेद बताए।
पिता ,सखा, भ्राता होती है।
मां है,जो बस मां होती है।।

मेरी माटी मेरा देश

सौभाग्य मेरा मिली धरा विशेष। मेरी
माटी.....मेरा देश।।

ऋषि मुनियों की धरती पावन ।
रामकृष्ण के चरित्र सुहावन।
सम्राटों का वैभव भावन।
उन्नति प्रतिपल सदा विशेष।
मेरी माटी मेरा देश

पर्वत की हिमनद से पिघले।
झर झर झर झरते हैं झरने।
सागर की लहरों में उफने।
गूंज रहा बस यह संदेश
मेरी माटी मेरा देश ।।

पंछी का कलरव जब गूंजे।
पायल की रुनझुन में झूमें।
सुबह की किरणें धरती चूमें
छोड़ो प्रीतम अब परदेस।
मेरी माटी मेरा देश।।

इतिहास उठाकर जब भी देखा।
बलिदानों की अजब है गाथा।
गौरव अक्षुण्ण मिटा नही था।
सौभाग्य अपना ये परिवेश।
मेरी माटी मेरा देश।।।

चन्दन लेपन अभिनंदन कर।।
माटी का नित नित वंदन कर।
प्राण निछावर खुद अर्पण कर।
इसमें ब्रह्मा विष्णु महेश।
मेरी माटी मेरा देश।।

गीत

प्रिय तुम्हारे मोहजाल में,
मैं खुद को ही भूल रहा हूं।
नहीं इधर का नहीं उधर का
जीवन मध्य झूल रहा हूं।।

जीवन पथ पर उलझी राहें ,
चल ना सका मैं तेरे संग संग।
सूना सूना बीत गया है,
पर भर ना सका जीवन में रंग।।
बदल ना पाया इस जग को मैं
सबको ही शूल रहा हूं।।
प्रिय तुम्हारे मोहजाल में मैं
खुद को ही भूल रहा हूं ।।

बरसों बीते प्रीत ढूंढते प्रीत नहीं पाई मैंने।
हार पराजय के पहने
और जीत नहीं पाई मैंने।
नैन बसे हैं स्वप्न तुम्हारे,
तुम चंदन, मैं धूल रहा हूं।
प्रिय तुम्हारे मोहजाल में
मैं खुद को ही भूल रहा हूं।।

क्षण क्षण प्रतिक्षण रीता जीवन
समय धूप झुलसाती थी मन,
स्मृति कंटक चुभते पल पल,
मैं विस्मृत वनफूल रहा हूं।।
प्रिय तुम्हारे मोहजाल में ,
मैं खुद को ही भूल रहा हूं।।

सक्षम है सबल हिन्दी

स्वर्णिम अतीत अपना दोहराते क्यों नहीं
सक्षम है सबल हिंदी अपनाते क्यों नही।

प्रो. (डॉ.) पूनम चौहान की कविताएं

आती है शर्म तुमको क्यूं अपने आप से।
क्यूं बोलते हो भाषा अंग्रेजी चाव से।
आखिर नकल पे अपनी शर्माते क्यूं नहीं।
सक्षम है सबल हिंदी अपनाते क्यूं नहीं।।

हिन्दी मे छिपे अपने संस्कार संस्कृति।
देखो तो अंधी दौड़ से आई है विकृति।
भाषा है अपना गौरव इठलाते क्यूं नहीं।
सक्षम है सबल हिंदी अपनाते क्यूं नहीं।।

है सूर तुलसी मीरा नानक कबीरसे
समृद्ध ज्ञान पद हैं,दोहे हैं तीर से।
पावन है संत वाणी तुम गाते क्यूं नही।
सक्षम है सबल हिंदी अपनाते क्यूं नहीं।।

विज्ञान ज्ञान और तकनीक की धनी।
सर्वोपरि है अपनी ये नागरी लिपि।
लेखनी से नागरी लिखाते क्यूं नहीं।
सक्षम है सबल हिन्दी अपनाते क्यूं नहीं।।

हिन्दी का बजा डंका समंदर के पार भी।
इसमें छुपी हैं संभावना सभी।
ये भूत अंग्रेजियत भगाते क्यूं नहीं।
सक्षम है सबल हिन्दी अपनाते क्यूं नहीं।।

वर्षा रानी

मान भी जा वर्षा रानी।
मत बरसा इतना पानी।
भरे हैं सारे ताल - तलैया।
जहां तहां पानी पानी।।

गिरते पेड़ किनारों से।
प्रलय मचाती धारों से।
दहशत में आई दुनिया।
टूट के गिरते पहाड़ों से
छोड़ भी दे ये मनमानी।
मान भी जा वर्षा रानी।।

डर टपके का सताबे री।
मुंह को कलेजा आबै री।
बूढ़ी अम्मा भूखी प्यासी
कोई ना धीर बंधावे री।
बहते आंसू कहे कहानी।
मान भी जा वर्षा रानी।।

गली चौबारों में पानी।
याद आ गई है नानी।
कामकाज ना कुछ होता।
तूने मन में क्या ठानी।
अब सजा खेत चूनर धानी।
मान भी जा वर्षा रानी।।

कैसे अपनी फसल बोए रे।
गांठ की पूंजी भी खोए रे।
पकड़के सर बैठा है किसना।
भरे खेत क्या होय रे।
कैसे होगी रे गुड़धानी।।
मान भी जा वर्षा रानी।।

मां की ममता

मां ना होती, कुछ ना होता, होता ना संसार।
मां की ममता मानव को, सृष्टि का उपहार।।

मां की कोख में जीव है पलता, पोषण पाती काया।
हाड़ मांस का पुतला मानव मां की कोख से आया।
लालन पालन करती मां तो,करती लाड़ दुलार।
मां ना होती ,कुछ ना होता ,होता ना संसार।।

शिशु की आंखें मां पर टिकती, एकटक देखे मुखड़ा।
बार बार मुख शिशु का चूमें, जैसे चांद का टुकड़ा।
मां के आंचल में सुख सारे, ममता मिले अपार।
मां ना होती कुछ ना होता होता ना संसार ।।

मां की उंगली थाम के चलना गिरना और संभलना।
सबसे पहली गुरु है मां, सिखलाए पढ़ना लिखना।
मां से सीखे शुभ कर्मों को, वही तो जीवन सार।
मां ना होती,कुछ ना होता, होता ना संसार ।।

ममता का कोई मोल नहीं रे, ममता है अनमोल।
भूखी रहकर , नींदे खोकर, ना बोले कड़वे बोल।
मोल चुका ना पाएगा तू ,ले ले जनम हजार।
मां ना होती, कुछ ना होता ,होता ना संसार।।

किन्नर

ना हम इधर हैं ना हम उधर हैं।
बता ए जमाने बता हम किधर हैं।

देखी किसी ने ना नज़रें सबाली।
रही झोली अपनी तो खुशियों से खाली।
हम वो फूल हैं नहीं जिनका माली।
मकां तो हैं अपने,नहीं अपने घर हैं।
बता ए जमाने बता हम किधर हैं।।

होली दीवाली जनम या सगाई।
नाचते गाते तुमको देते बधाई।
दुनियां की सब हमने रस्में निभाई।
क्या है खता जो ,हम दरबदर हैं।
बता ए जमाने बता हम किधर हैं।।

कहते हैं कि फलती दुआएं हमारी।
गैरत से जीना है मगर हमको भारी।
देखे हिकारत से दुनियां ये सारी
ना नर हैं ना नारी हम तो किन्नर हैं।।
बता ए जमाने बता हम किधर हैं।।

वर्षा रानी

मान भी जा वर्षा रानी।
मत बरसा इतना पानी।
भरे हैं सारे ताल - तलैया।
जहां तहां पानी पानी।।

गिरते पेड़ किनारों से।
प्रलय मचाती धारों से।
दहशत में आई दुनिया।
टूट के गिरते पहाड़ों से
छोड़ भी दे ये मनमानी।
मान भी जा वर्षा रानी।।

डर टपके का सताबे री।
मुंह को कलेजा आबै री।
बूढ़ी अम्मा भूखी प्यासी
कोई ना धीर बंधावे री।
बहते आंसू कहे कहानी।
मान भी जा वर्षा रानी।।

गली चौबारों में पानी।
याद आ गई है नानी।
कामकाज ना कुछ होता।
तूने मन में क्या ठानी।
अब सजा खेत चूनर धानी।
मान भी जा वर्षा रानी।।

कैसे अपनी फसल बोए रे।
गांठ की पूंजी भी खोए रे।
पकड़के सर बैठा है किसना।
भरे खेत क्या होय रे।
कैसे होगी रे गुड़धानी।।
मान भी जा वर्षा रानी।।

अरी लेखनी गीत लिखो री

अरी लेखनी गीत लिखो री
भारत के रणधीरों के।
वीर सपूती मां के जाए
भारत के रण वीरों के।

पांव बर्फ में धंसें,कभी तो,
चलते रेगिस्तानों में ।
कभी झुलसते लूओं में
तो घिरे कभी तूफानों में।
देश की खातिर प्राण लुटाते
साहसी नायक वीरों के।
अरी! लेखनी गीत लिखो री
भारत के रणधीरों के।।

जागें रातों रात मगर,
पलकों से पलके मिली नहीं।
मां के रक्षा में शस्त्र उठे
तो फिर आंख किसी की उठी नहीं।
शत्रु का सीना चीरने वाले,
घायल धीर अधीरों के।
अरी,! लेखनी गीत लिखो री!
भारत मां के वीरों के ।।

मातृभूमि पर मिटते आए
कैसे वो दीवाने थे।
देशभक्ति की लौ में जल गए
अजब गजब परवाने थे।
भारत के अनमोल रतन हैं जो
जगमग सच्चे हीरों के।
अरी! लेखनी गीत लिखो री!
भारत के रणवीरों के।।

कैसे कैसे लोग मिले

जीवन पथ पर चलते चलते
कैसे कैसे लोग मिले।
झूठ दंभ से भरे हुए तो
कुछ सीधे सच्चे लोग मिले।

पल में तोला पल में माशा,
भावों का गणित अनोखा है
सांप आस्तीन में पलते ये
फितरत इनकी धोखा है।
चालाकी और मक्कारी से
प्रपंच रचाते लोग मिले।
जीवन पथ पर चलते चलते
कैसे कैसे लोग मिले।।

दुनिया भर से शिकवे शिकायत
अपना कोई फर्ज़ नही।
इनकी गलती याद न रखना
हो जाए तो हर्ज नहीं।
ख्वाहिशों के बोझ तले
कुछ खीझे खीझे लोग मिले।
जीवन पथ पर चलते चलते
कैसे कैसे लोग मिले ।।

समय जो बदला अपना तो
लोगो को बदलते देखा है।
गिरगिट बस बदनाम हुआ है
मौसम इनसे झेंपा है।
बनके अनजाने फिर हम से
कुछ पहचाने लोग मिले।
जीवन पथ पर चलते-चलते
कैसे-कैसे लोग मिले ।।

मतलब से इज्जत मिलती है
मतलब की सब सौगातें हैं ।
सच्चाई अच्छाई अब तो बस
कहने की बातें हैं ।
गरज पड़ी जो अपनी तो फिर
गले लगाते लोग मिले।
जीवन पथ पर चलते चलते
कैसे-कैसे लोग मिले।।

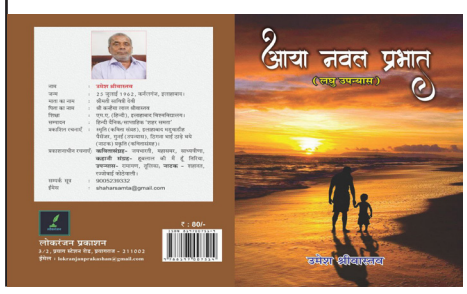

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ ।

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

दो लघुकथाएं

मतिभ्रम

गांव में चौपाल लगी थी। रधिया ,पुष्पा कमली,बद्री , मीना , रावी,और भी सब मजदूर महिला मण्डली अपनी फरियाद लेकर सरपंच जी के पास खड़ी थीं। उनका कहना था कि ठेकेदार राघव ने बुधनी को तो 5000 रु अलग से दे दिया है और हम सब को उतना पैसा में टरका दिया है।आज यह फैसला होना चाहिए ।हम सब को भी उतना ही पैसा चाहिए। हम सब मजदूरी करते हैं तो हमें भी उतना ही पैसा मिलना चाहिए।

सरपंच जी के पूछने पर राघव ने बताया कि मैं बुधनी को पैसे दिए हैं।मगर मनरेगा के पैसे नहीं हैं।वो मैने बुधनी को अलग से दिए हैं ।

मगर पूरी महिला मजदूर मंडली मानने को तैयार नहीं थी आज तो वे बुधनी को सबक सिखाना चाहती थी।पोल खोलना चाहती थीं सबके सामने बुधनी की।जो जलन ईर्ष्या उनके अंदर घर कर गई थी वह आज उन्हें यहां सरपंच के सामने पंचायत में ले आई थी ।मगर राघव भी कुछ बताने में असमर्थ हो रहा था कैसे बताएं कि यह पैसे उसने कहां से बुधनी को दिए और क्यों दिए। उसे बुधनी ने मना किया था।

अगर वह महिलाओं की बात सुनता तो समझ में आता कि आखिर क्या खिचड़ी पक रही है,? अरी देख तो ठेकेदार के कैसे हंस हंस के बतिया रही है,?और देख शाम को तो साथ-साथ जा रही थी ।और सुन! उसके घर भी जाकर ठेकेदार बतियाता है, जो उसका फायदा हो, अरे हमारा भी तो होना चाहिए।और आज तो हद्द हो गई बुधनी को 5000 रु दिए हैं ।बुधनी तो खुश होकर घर गई है। ठेकेदार की शिकायत हम करेंगें पंचायत में और तभी नंगी होगी ये बदजात!

इन सब बातों से अलग राघव जब सबको समझा नहीं पाया तो उसने कुछ झल्लाहट भरे शब्दों में कहा कि हां !बुधनी को पैसे दिए हैं ,मगर उसने हमसे पैसा उधार लिया है, उसके मर्द का इलाज कराने के लिए। उसके मर्द को टी वी की बीमारी है, उसे इलाज़ के लिए शहर ले जाना है। वो नहीं चाहती थी कि उसके मर्द को पता। चले इस लिए किसी को बताने से मना किया था।वो पैसा हर महीने की तनखाह के साथ कट जाएगा। क्या किसी की मदद करना गलत है पाप है।सुनकर पूरी पंचायत चुप रह जाती है और महिला मजदूर भी लज्जित अनुभव करती हैं कि हम ईर्ष्या द्वेष के चलते अपनी ही साथी महिला को बेइज्जत किया। आखिर क्यूं हम बिना जाने समझे दूसरे व्यक्ति पर आरोप लगा देते हैं। बिना सोचे समझे किसी का अपमान कर देते हैं। अपमानित व्यक्ति का दुःख सिर्फ वही जानता है। आज सारी महिला मजदूर शर्मिन्दा सर झुकाए खड़ी थीं।

अपंग

गहराती रात में समुंदर की लहरों पर लेजर लाइट चलता खुश होता अमन अपने आसपास अकेलापन पाकर सकपका कर रोने लगा।उसके रोने की आवाज सुनकर इक्का दुक्का राहगीर पास आएऔर सहानुभूति जताने लगे मगर बालक की तरह बोलने की असमर्थता देख उसको पुलिस स्टेशन में पहुंचाकर चले गए । गूंगे अमन को कुछ भी बताने में असमर्थ पाकर पुलिस ने अखबार और दीवारों पर पोस्टर लगवा दिए , और जब कोई भी अमन को लेने नहीं आया तो अनाथ और गूंगे अमन को पुलिस ने भी अनाथ आश्रम में भर्ती करवा कर अपनी ड्यूटी से मुक्ति पाई।

अचानक एक दिन अखबार के पृष्ठ पर अमन का फोटो और अनाथ आश्रम का पता देखकर अमन के चाचा ने अपने पिता यानी दादा जी को बताया तो बूढ़ी आंखों में खुशी के मोती झिलमिलाने लगे कि चलो उसके मृत बेटे बहु की निशानी उसे वापस मिल जाएगी। कोरोना के अजगर ने अमन के मां बाप को निगल लिया था और अनाथ अमन चाचा चाची के साए में उपेक्षित जीवन जी रहा था।दादा ने पोते को लाने के बात जब छोटे बेटे से कहीं तो, वहीं खड़ी जलती आंखों से देखती बहू ने तमक कर फरमान सुनाया ।कोई नहीं लाएगा अमन को !,हमने जैसे-जैसे पीछा छुड़ाया था समुद्र किनारे से छोड़कर। अब दोबारा फिर वो बोझा अपने सिर पर लाद लें हम। जिसे लाना है वो उसी के साथ रहे घर से बाहर। उसे भी घर में आने की जरूरत नहीं। लाचार बूढ़ा, निक्कमा बेटा और एक अपंग!सबके लिए हम अपनी जिंदगी बर्बाद कर लें ? छोड़ दो उसे उसके हाल पर अनाथ आश्रम में जी लेगा। अगर ज्यादा लाड़ है किसी को तो, जा रहो उसके साथ। ये कहकर चिल्लाती अमन की चाची कमरे में जा बैठी ।बहू की बात सुनकर बूढ़ा और उसका बेरोजगार बेटा अवाक थे कि अपंग कौन है हम या वह अनाथ अमन?

संस्मरण

जब महाकाल ने की रक्षा

29 अक्टूबर 2021 में उज्जैन (मध्य प्रदेश)में श्री महाकाल ज्योतिर्लिंग के दर्शन की मनोकामना पूर्ण होना परम हमारा सौभाग्य था ,और साथ ही श्री ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन सोने पे सुहागा। हमने सपरिवार जयपुर से कोटा होते हुए 7:00 बजे सायं महाकाल की नगरी में प्रवेश किया। अगले दिन प्रातः काल महाकाल के परम सुखदायक दर्शन हुए। महाकाल को हमने शीश झुकाया और प्रार्थना की, हे!महाकाल हमारे परिवार पर दया दृष्टि रखना, हमारी रक्षा करना ,अपनी कृपा सदा बनाए रखना। हम प्रार्थना कर महाकाल से अपने समस्त रूपों में दर्शन देने की कामना करते हुए मन्दिर परिसर के विभिन्न पुरातन देवी देवताओं के दर्शन कर वापिसी में श्रीओमकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन भी अति सौभाग्य से प्राप्त कर चुके थे, और शाम भी हो चुकी थी। कोटा पंहुचना सम्भव नहीं था, सो इन्दौर नगर में रात्रि विश्राम किया। इंदौर के प्रसिद्ध सर्राफा के रात्रि कालीन व्यंजन बाजार के व्यंजनों का आनंद उठाया। सुबह बाजार से कपड़े आदि खरीदे। बाजार में घूमते घामते हमें बहुत समय लगा। अब हमारी वापिसी थी कोटा के लिएऔर हम हाईवे से चल दिए।

रात ज्यादा न हो इसलिए जल्दी अपने गंतव्य पर पहुंचने का प्रयास करने लगे।जब आप गूगल बाबा निर्भर हो जाते हैं तब सही चले तो सही वरना आपके साथ कुछ भी बुरा होने की संभावनाएं भी बढ़ जाती हैं। गूगल बाबा के निर्देशपर हाईवे से चलते चलते हाइवे छोड़कर शॉर्ट कट रास्ते उतर गए तो रास्ता ठीक-ठाक लगा । दो एक बाइक सवारों ने भी रास्ता सही और सड़क अच्छी बनी है, ऐसा कहकर हौंसला बढ़ा दिया । हम आगे बढ़े, दो वाहनों के आवागमन का मार्ग धीरे धीरे एकल हो गया । अकस्मात इक्का दुक्का दिखने वाले बादल घने होकर घिरने लगे। बढ़ती रात और बारिश ने माथे पर सिलवटें डाल दीं।गूगल बाबा के सहारे ही चल रहे थे कि आगे गांव के बीच में निकलते ही सन्देह हुआ कि हम गलत मार्ग पर तो नहीं। क्योंकि यहां गुगल बाबा मुड़ने का निर्देश रहे थे और हम भ्रमित कि आगे गए वाहन के पीछे चलें या गुगल के अनुसार। अब गुगल की सच्चाई जानने के लिए चाय वाले से पूछा तो उसने मार्ग के सही होने पर पर मोहर लगा दी कि कोटा का मार्ग यही है, आप जा सकते हैं।हमारी गाड़ी उसी मार्ग पर चल दी।शाम का झुरमुटा और बारिश की बूंदे चिन्ता बढ़ा रही थी। बेटे ने स्टेरिंग पर हाथ रखा और गाड़ी को संतुलन के साथ तीव्र किया ।क्योंकि हम चंबल के बीहड़ का ज़िक्र सुना था और अनजाने में इसी क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे ।रास्ता सूनसान था ।अभी कुछ किलोमीटर चले थे कि तभी एक दूधिया भेषधारी बाइक सवार गाड़ी सेआगे निकलने का प्रयास करने लगा, मिराज महिंद्रा 7सीट वाली गाड़ी से आगे निकलने का प्रयास यदि कोई दूधिया बाइक से करें वो भी बार बार तो माथा ठनकना स्वाभाविक था।इतने में में दो बाइक सवार गाड़ी के पीछे आते दिखाई दिए, मन संदेह से भर चुका था फिर लगा शायद वहम हो रहा है क्यूं कि दूधिया की बाइक पर दोनों तरफ़ लटकती केन उसे दूधिया दिखा रहीं थी, तो उसकी भाव भंगिमा और वेशभूषा सन्देह में डाल रही थी।लाल बिना बांह वाली टीशर्ट माथे पर बंधा पटका , तेज गति से आगे निकलने का प्रयास करना , बार बार मुड़कर देखना। एक समय में अनिल कपूर का टी शर्ट में माथे पर रुमाल बांधबाइक दौड़ाते गुंडा किरदार आंखों के समक्ष आ गया ,जब देखा बाइक सवार भी तीव्र गति से आ रहे हैं ,तो अनजान स्थान अनजाने लोग मन भय से भर उठा कि आज कोई अनहोनी न हो जाए। हमने तुरन्त अपनी शंका व्यक्त की और सब शंकित हो उठे ।लेकिनमहाकाल का स्मरण हृदयको बल प्रदान कर रहा था।अब बेटे ने उनके इरादे भांप कर गाड़ी की गति बढ़ा दी थी ,आज कुछ हो जाए मगर न तो गाड़ी रोकनी है ना ही धीमी करनी। अब पीछे आने वाले बाइक सवार बहुत पीछे रह गए थे और दूधिया पांचवी बार गाड़ी से आगे निकल चुका था।वाकई सोचने बाली बात थी,क्या आवश्यकता उसे गाड़ी से आगे निकलने की। बेटे ने भी सोच लिया था सामने से अगर बाइक लाया तो चाहें गाड़ी चढ जाय। कभी तो लगता के सामने मार्ग बंद हैं चारों तरफ घने झाड़ झंकाड़ ।कभी लगता कि मार्ग ही बंद हो, और वहां मोड़ होने पर सांस आती। सड़क संकरी। टूटी फूटी, गड्ढे गाड़ी की गति बाधित कर रहे थे।मगर आज गाड़ी नहीं सुरक्षा प्रमुख थी।हालांकि दो तीन सवारी गाड़ी मिली उनसे राहत मिलती की हम सही हैं और हिम्मत आ जाती। मगर महाकाल का निरंतर स्मरण करते हुए गाड़ी की गति धीमी नहीं होने दी गई ना ही दूधिया को आगे निकलने दिया गया ,तब भी वह एक बार तीव्र गति से ओवरटेक करके निकला और बहुत आगे बढ़ गया ,हम उसी मार्ग पर गुगल बाबा को कोसते और महाकाल का स्मरण करते आगे बढ़ते गए। आगे वह दूधिया भेषधारी गांव के मध्य किसी व्यक्ति से खड़ा बात कर रहा था और गौर से हमारी गाड़ी को देख रहा था मगर शायद हताश होकर फिर पीछे नहीं आया क्योंकि उसके पीछे चलने वाले दो बाइक सवारों को हम बहुत पीछे छोड़ चुके थे , उसके बाद भी गाड़ी काफी तेज गति से चलाई,मगर फिर दूधिया आता नहींदिखाई दिया,और कुछ किलोमीटर की दूरी पर नेशनल हाईवे भी मिल चुका था तब हमने चैन की सांस ली और किसी अनहोनी घटना से हमारी रक्षा करने लिए महाकाल का धन्यवाद दिया। अभी इस घटना का क्लाइमेक्स शेष था। हम लोग बेटे की ससुराल पहुंचे उन्होंने घटना का विवरण सुना तो कहा कि आपको उधर से नहीं आना था वो क्षेत्र लूटमार करने वाले लोगों का है ,आपकी बुरी घड़ी टल गई ।खैर आतिथ्य सत्कार के बाद घर वापसी हुई और हमने महाकाल को बारंबार धन्यवाद दिया। और महाकाल की कृपा का वास्तविक अनुभव तब हुआ जब पुत्र वधू के भाई ने एक सप्ताह बाद फ़ोन पर बताया कि बुआ के यहां समाचार पत्र से पता चला कि उस दिन जो दूधिया हमारा पीछा कर रहा था, उसके गैंग का पर्दाफाश हो चुका है वे सब पकड़े जा चुके हैं। उनका गैंग दूधिया को आगे भेज गाड़ी की गति धीमी करा कर रोकता है तब तक अन्य साथी लोग आ जाते हैं ,और बाइक के दोनों तरफ़ लटकी केन से पत्थरों को निकालकर गाड़ी फेंककर शीशे तोड़कर डराते हैं , और गाड़ी लूट लेते हैं। शिव! शिव! शिव !शक्ति महान है महाकाल की।हमारे साथ कुछ भी हो सकता था।हो सकता हम किसी कारण से गति धीमी करते तो वो पीछे से वार करते या दूधिया आगे आता दुर्घटना न हो गाड़ी रोकनी पड़ती और निश्चित रूप से हम लूट का शिकार हो जाते ।मगर जब महाकाल स्वयं रक्षक हों तो भक्तों का कोई का क्या बिगाड़ सकता है जय महाकाल। हर हर महादेव।

जीवन वृत्त

मेरा जन्म उत्तर प्रदेश में मेरठ जिले में हुआ। घर में माता पिता दो बहन और दो भाई हैं पिता ङजसपुर कस्बे मे खादी ग्रामोद्योग आयोग में मंत्री पद कार्यरत थे।इस तरह मेरी शिक्षाङ दीक्षा यही हुई।राजस्थान से मैने स्नातक किया ।और एम ए हिंदी धामपुर बिजनौर के एस बी डी महिला महाविद्यालय परिसर में रहकर प्राप्त की ृ भी यही से किया।तत्पश्चात एम फिल और इ् आगरा विश्विद्यालय से प्राप्त की। 2001में आयोग से एस बी डी महिला महाविद्यालय धामपुर में हिंदी विभाग में नियुक्ति मिली। 2014से2022 तक और एक वर्ष के अन्तराल के बाद निरंतर कार्यवाहक प्राचार्या के पद पर भी कार्य कर रही हूं। महाविद्यालय में एन.एस.एस और रेजर्स टीम प्रभारी का कार्यभार संभाला और विभिन्न साहित्यिक, एकेडमिक ,गतिविधियों में संयोजन, आयोजन किया।11लघु शोध और 3पीएचडी मेरे निर्देशन में पूर्ण हो चुकीं हैं।लगभग 15शोधपत्र एवम 3पुस्तकें प्रकाशित हो चुके हैं।

दो कहानियाँ

नंदी

स्टेशन पर चहल पहल थी। गाड़ी आने का सिग्नल हो चुका था। यात्री अपना अपना सामान संभाल गाड़ी की ओर बढ़ रहे थे ।तभी स्टेशन पर छोटी सी बच्ची को गोद में लिए सतर्क निगाहों से इधर उधर देखती एक युवती ने प्रवेश किया। उसकी निगाहें भयभीत होने का प्रमाण दे रही थीं है न जाने कहां से हो आई थी और कहां जाना था कोई अनुमान नहीं लगा सकता था। एक नज़र डालकर सभी अपने आप में व्यस्त हो गए और वह एक किनारे चलते हुए अपने आप को छुपाते हुए एक तरफ खड़ी हो गई गाड़ी स्टेशन पर आ गई थी। लेकिन तभी स्टेशन पर चार-पांच लाठी डंडे लिए गुंडे से दिखने वाले लोग प्रवेश द्वार से खोजी निगाहों से देखते लगभग दौड़ते से आए, उन्हें शायद उसी युवती की तलाश थी ।वो लोग इधर-उधर उसे ढूंढने लगे और ट्रेन पर चढ़ने का प्रयास करती उस युवती को उन गुंडे जैसे दिखने वाले लोगों ने पकड़ लिया और बालों से खींचते हुए ले जाने लगे। युवती चीखती चिल्लाती उनका विरोध करती रही , मगर अपनी चढ़ने की जल्दी में कोई बोलकर भी क्या कर सकता था।

उसे युवती का नाम नंदी दीत था जो कि अपनी बेटी का भविष्य बचाने के लिए ससुराल कहलाने वाले नर्क से भाग आई थी।ये सोचकर कि कहीं मजदूरी कर लेगी काम कर लेगी ,लेकिन अपने बेटी का भविष्य बिगड़ने नही देगी।

मां बाप तो ब्याह कर निश्चित हो गए थे। मगर नंदी का जीवन जैसे कहानी बनता जा रहा था । नंदी गरीब परिवार से ब्याह कर जिस परिवार में आई थी उसे परिवार की वास्तविकता जानकर वो व्याकुल और भयभीत हो गई थी।उसे पता चला था कि जिस परिवार में आई थी । उस परिवार में स्त्री का शरीर भोग के साथ क्रय की भी वस्तु था।वेश्यावृत्ति का अड्डा थी उसकी ससुराल।

परिवार के लोग घर की स्त्रियों से वेश्यावृत्ति कराते थे। इसका पता पिता को नहीं चल पाया था। और नंदी उस नर्क में रोज काम वेदना की बलि चढ़ जाती। पिता की असमर्थता और दूरी उसे नरक में जीने को बिबस कर रही थी। नंदी ने ये प्रयास किया इस घर को छोड़ दे लेकिन आज सफल नहीं हो पाई थी।कैसे आज जब घर परिवार के लोग बाहर गए थे और स्त्रियां घर में अपने अंदर कमरों में थी वो चुपचाप अपनी बच्ची को लेकर भाग चुकी थी।

घर में नंदी को न पाकर वो लोग अनुमान से स्टेशन पहुंचे और खोजकर मारते पीटते ट्रैक्टर में डालकर अपने साथ वापस ले आए।जहां नंदी के साथ पुनः बहुत अत्याचार हुआ। नंदी को पूरी रात मारा पीटा गया।उसकी बेटी रोती रही, भूखी चिल्लाती रही,उसे दूध भी नहीं पीने दिया गया आखिर में नंदी क्या करती उसने स्थिति के आगे घुटने टेक दिए, और अपनी बेटी के लिए उसने खुद को खामोश कर लिया।

अब उसे फिर एक बार उसके मौका हाथ लगा था।जब सारे परिवार वाले
मेला देखने गए और घर में पियक्कड़ पति नशे में धुत पड़ा था।उसने आज फिर एक बार प्रयास किया और अपनी बच्ची को लेकर स्टेशन पर पहुंची । और आज उसके भाग्य से ट्रेन समय से आ गई और वह ट्रेन में सवार हो गई।

टिकट पूछा तो नंदी ने जवाब दिया उसके पास पैसे नहीं है आप चाहो तो यह मेरा चांदी का मंगलसूत्र ले लो । टी टी समझ गया कि घर से भागी हुई है उसने उस परेशानी के बारे में पूछा कि माजरा क्या है कि सब बताया। नंदी की कहानी से टी टी पसीज गया,और उसने दया करके नंदी को रेलवे पुलिस के माध्यम से महिला पुलिस के सुपुर्द कर सारी व्यवस्था करा दी। नंदी ने अपनी सारी कथा महिला थाने में सुनाई तो नंदी को सुरक्षा मिली और लेकिन डर फिरभी था कहीं वो दुष्ट आकर
उसे फिर परेशान ना करे। लेकिन महिला थाने की प्रमुख इंचार्ज ने उसे भरोसा दिलाया कि वो उसे अपने संरक्षण में रखेगी।सौभाग्य था कि इस बार उसकी बेटी का भविष्य बच गया था। वरना उसकी बेटी किसी को बेच दी जाती। बेटी का भविष्य बचा कर आज नंदी खुश थी ,क्योंकि अब अपनी बेटी को पढ़ा लिखा कर योग्य बनाकर उसे अच्छा भविष्य दे सकती है।जहां उसे सुरक्षा, सम्मान मिले,वहां उसको ब्याहेगी।भविष्य के सुनहरे सपने देखती नंदी आज बहुत खुश थी।

दोषी कौन?

संध्या बहुत खुश थी कि उसके बड़े पुत्र का विवाह बहुत शान और शौकत के साथ संपन्न हुआ ,पुत्रवधू शिक्षित और सुंदर थी । और क्या चाहिए था उसे ।विवाह के 3 महीने बाद दोनों विदेश चले गए पुत्र की नौकरी लंदन में थी ,सो जाना ही था। पति पत्नी अपना जीवन सुख और आनंद से गुजार रहे थे। उनकी बच्ची 3 साल की हो चुकी थी । समय ने अपना पाला बदला , कोरोना आ गया । जब वापस घर लौटना हुआ तो ऑफिस के काम घर से होने लगे। सारा परिवार साथ रहने लगा , ऐसा लगा जैसे खुशियां वापस लौट आई। दादा दादी बच्ची के साथ मगन रहते, मगर बहू को पति का घर में घुल ना मिलना ,मां बाप का आज्ञाकारी होना रास नहीं आ रहा था।

विदेश में पति पत्नी के ईर्द गिर्द रहता। कामकाज में हाथ बंटाता और अब उसके पास इतना समय नहीं रह पाता था । बहु का मन उखड़ने लगा उसने अलग घर में रहने की ज़िद की। बहु की जीत हुई, सास ससुर ने उसकी ज़िद पूरी कर दी । लेकिन उन दोनों के वहां भी झगड़े होने लगे। सास ससुर की परछाई उसके पति पर पड़े,ये उसे बर्दाश्त नहीं होता था।अब झगड़ा कैसे बंद हो।पति ने हथियार डाल दिए। क्या चाहती हो ? बताओ? पहले पुणे की कंपनी ज्वाइन करो और पुणे में घर लो। मैं यहां नहीं रहूंगी! लेकिन बताओ इन्दु ! अगर हम पुणे में घर ले लिया और दोबारा लंदन जाना पड़ा।तो फिर पुणे का घर बेकार हो जाएगा, खरीदने बेचने का तमाम झंझट लेने से क्या फायदा?

नहीं! मुझे तो वही घर लेना है! इन्दु तुनककर बोली! अच्छा एक काम करो अपने मायके में मकान ले लो । तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होगी। मैं लंदन अकेले गया तुम आराम से रह सकती हो । अन्वय ने। समझाया ?नहीं !मुझे नहीं रहना! इन्दु ने कहा!

अन्वय बोला!अच्छा बताओ! अभी भविष्य का कुछ पता नहीं! पहले हम घर-घर का झगड़ा ले बैठे ! अन्वय बोला ! पहले यहीं कोई नौकरी मिल जाए तो ठीक है। इन्दु ने देहरादून आदि जगह में कुछ फॉर्म भरे और इन्दु को सैनिक स्कूल में नौकरी का मौका मिल गया, और अब एक डाल छोड़ दूसरी डाल जा बैठी इन्दु। स्वतन्त्र जीने की चाह में तलाक का केस कर दिया। अब तारीखों का दौर जारी है, सुलह के आसार नजर नहीं आते। नन्ही बच्ची पिता के प्यार और दादा दादी के दुलार से वंचित हो गई है।मकान के नाम पर घर टूट गया, यह समझ मॉर्डन लड़की को क्यों नहीं आती? उसकी नासमझी ने हंसते खेलते परिवार को विघटन की ओर धकेल दिया? आखिर क्या होगा इस परिवार का? दोषी कौन है?विचारिए??